study time
Page No.:
Date : / /

बौद्ध-कालीन शिक्षा के उद्देश्य → (Aims of Buddhist Education)-

① **धार्मिकता का विकास →** बौद्ध मत के अनुसार निर्वाण - प्राप्ति के बिना दुःखों से छुटकारा नहीं मिल सकता। निर्वाण धर्म एवं ज्ञान से प्राप्त होता था। अतएव शिक्षा में धार्मिकता को महत्व दिया गया। बौद्ध - शिक्षा संघों में दी जाती थी।

② **व्यक्तित्व का विकास →** आत्मसम्मान, आत्मविश्वास एवं आत्मनियन्त्रण के भाव विद्यार्थी में उत्पन्न किये जाते थे। नम्रता, शालीनता एवं शिष्टाचार का महत्व था। आत्मविश्वास उत्पन्न करने के लिए प्रतियोगिताएँ एवं शास्त्रार्थ का आयोजन किया जाता था। आत्मनियन्त्रण के लिए सम्यक् आहार-विहार पर जोर दिया जाता था।

③ **चरित्र निर्माण पर बल →** महात्मा बुद्ध ने सदाचार पर बल दिया। अतः एवं बौद्ध शिक्षा - प्रणाली में सात्विक जीवन एवं शुद्ध विचार ढाल जीवन का आदर्श था। प्राचीन काल की भाँति इस काल में भी 'ब्रह्मचर्य' का विद्यार्थि जीवन में बहुत महत्व था। सात्विक भोजन, सात्विक वस्तों का प्रयोग एवं उत्तेजक पदार्थों का त्याग अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक था।

Scanned with CamScanner

(4) सामाजिक कर्त्तव्यों पर बल → इस काल में जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण-प्राप्ति था फिर भी सामाजिक जीवन की उपेक्षा नहीं की गयी थी। बौद्ध धर्म में सबसे अधिक बल करुणा और दया पर दिया गया है। बिना करुण भाव के एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुःखों को नहीं समझ सकता और बिना दया किए एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुःखों को दूर नहीं कर सकता और जब तक सब मनुष्य एक दूसरे के दुःखों को दूर नहीं करते संसार के दुःखों से बचा नहीं जा सकता।

(5) कला कौशल एवं व्यवसायों की शिक्षा → बौद्ध कालीन शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक कुशलता का उन्नयन एवं कला कौशल का विकास करना भी था। बौद्ध काल तक हमारे देश में कृषि, पशुपालन, कला कौशल और वाणिज्य के क्षेत्र में काफी प्रगति हो चुकी थी।

(6) राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं विकास → राष्ट्र की संस्कृति का संरक्षण, विकास एवं प्रसार भी बौद्ध शिक्षा का उद्देश्य था। बौद्ध मठों एवं विहारों में बौद्ध धर्म एवं दर्शन के साथ-2 अन्य धर्मों दर्शनों एवं संस्कृतियों के अध्ययन की व्यवस्था थी।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

बौद्धकालीन शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Buddhist Education) →

(1) **शिक्षा का समान अवसर** → बौद्धकालीन शिक्षालय के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी जातियों के लिए समान रूप से खुले रहते थे। विद्यार्थियों में ब्राह्मण और क्षत्रियों के लड़के अधिक होते थे। राजा महाराजाओं से लेकर भंगुओं तक के बच्चे एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। केवल चाण्डालों के पुत्रों को शिक्षालयों में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था।

(2) **शिक्षा प्रारम्भ करने की उम्र** → बौद्धकाल में शिक्षा आरम्भ करने की आयु 8 वर्ष थी विद्यालय में प्रवेश लेने के बाद विद्यार्थी श्रमण या सामनेर अथवा नवशिष्य कहा जाता था। नये शिष्य के रूप में उनको 12 वर्ष तक अध्ययन करना पड़ता था। जब 20 वर्ष की अवस्था हो जाती थी तो भिक्षु के रूप में वह प्रवेश करता था। शिक्षा पाने के लिए हर विद्यार्थी को अपने माता-पिता की आज्ञा लेना आवश्यक होता था।

Scanned with CamScanner

(3) विद्यार्थियों का चुनाव → सभी जातियों के लोगों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार होता था। लेकिन निम्न बातों में से कोई भी बात यदि छात्र में होती थी तो वह शिक्षा पाने के लिए अयोग्य समझा जाता था।

(i) जो किसी राज्य की नौकरी करता हो।
(ii) जो जेल खाने से भागकर आया हो।
(iii) जिसे राज्य की ओर से दण्डित किया गया हो।
(iv) जिसे डाकू घोषित किया गया हो।
(v) जिसका कोई अंग-भंग हो।
(vi) जो नपुंसक हो।
(vii) जो दास अथवा कर्जदार हो।
(viii) जिसे विद्या प्राप्त करने के लिए माता-पिता की आज्ञा न हो।

(4) संस्कार → बौद्ध शिक्षा में प्रव्रज्या संस्कार होने के बाद ही छात्र विद्यालय में (मठों में) शिक्षा पाने का अधिकारी समझा जाता था। प्रव्रज्या का अर्थ है, बाहर जाना। इसका तात्पर्य छात्र का अपने परिवार से अलग होकर बौद्ध मठ में प्रवेश करना। बौद्ध ग्रन्थ विनयपिटक "छात्र अपने सिर का बाल मुड़वाता था, पीले वस्त्र पहनता था। मठ में भिक्षुओं के चरणों में अपना माथा टेकता और पालथी मारकर बैठ जाता था।"

Scanned with CamScanner

"बुद्धं शरणम् गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।"

दस आदेश →

(i) अशुद्धता को दूर करना।
(ii) असत्य भाषण न करना।
(iii) जीव हत्या न करना।
(iv) चोरी न करना।
(v) मादक वस्तुओं का सेवन न करना।
(vi) शृंगार साधनों का प्रयोग न करना।
(vii) नृत्य, संगीत, तमाशा आदि के पास न जाना।
(viii) ऊँचे बिस्तर पर न सोना।
(ix) वर्जित समय पर भोजन न करना।
(x) सोने चाँदी का दान न लेना।

(5) उपसम्पदा संस्कार →